प्रोफेसर तातेड़ की टी.वी वार्ताएँ

2. भारतीय धर्म दर्शन

इस देश में धर्म और दर्शन की एक प्राचीन परम्परा रही है। यहां की संस्कृति धार्मिक संस्कृति है। यहां का कण-कण धर्म से अनुप्राणित है। वेद धार्मिक आस्था के आधार है। यहां का आचार-विचार धर्ममूलक है। यह संस्कृति हमें मानवता का संदेश देती है। धर्म वस्तुतः आस्था का विषय है। धर्म की भी अनेक परिभाषाएँ की गई है। ''आत्म शुद्धि साधनं धर्म'' इस परिभाषा के अनुसार धर्म वह तत्व है जिससे आत्मा शुद्ध होती है। आत्मा मूल रूप से ज्ञानस्वरूप है। वस्तु का स्वभाव ही धर्म कहलाता है। जो इतर चीजें होती है वह अधर्म है। जैसे पानी का गुण है शीतलता, अग्नि का धर्म है उष्णता। जब उनके गुण को विकृत किया जाता है तो उनका स्वरूप बदल जाता है। जब वह अपने स्वरूप में रहता है तो वह तत्व धर्म तत्व कहलाता है। धर्म व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है। एक उदाहरण के द्वारा इसको समझा जा सकता है। धर्म को सम्प्रदाय की जंजीर से बांध दिया जाता है तो धर्म विकृत हो जाता है। भारत में अनेक धर्म है। जैन, बौद्ध, सिक्ख, इस्लाम, पारसी और हिन्दू धर्म। ये सब सम्प्रदाय है। सबकी अपनी-अपनी पूजा पद्धति और उपासना पद्धति है और उस पूजा पद्धति के अनुसार धर्म को संकीर्ण कर दिया जाता है। धर्म मानव को मानव से जोड़ता है। धार्मिक क्रियाकलाप के आधार पर मानव अपने आस्था को प्रकट करता है। सुख-दुःख, मोक्ष इत्यादि तत्वों को प्राप्त करता है। श्रीमद् भगवद्गीता जो कि हिन्दू धर्म का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है इसमें आत्मा की अजरता-अमरता का बड़ा दार्शनिक विवेचन किया गया है। इसमें बताया गया है कि शरीर नश्वर है और आत्मा अजर-अमर। जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को धारण करता है वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करती है। शरीर पंचभूतात्मक है। आत्मा इससे परे है। शुद्ध आत्मा ज्ञान, दर्शन और चारित्र से युक्त है। आत्मा अरूपी है किन्तु जब यह शरीर को धारण करती है तो यह रूपी कहलाने लगती है।

धर्म के पश्चात् दर्शन भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण विषय है। दर्शन का साधारण अर्थ होता है—'देखना, श्रद्धा करना।' हम जो देखते है वही सब कुछ नहीं है। हम केवल स्थूल चीजों को देखते है, लौकिक जगत को देखते है और इसी को सब कुछ मान लेते है। इससे परे पारमार्थिक या आध्यात्मिक जगत है। यही वास्तविक तत्व है। हमारे देश के ऋषियों, महर्षियों ने लौकिक जगत को छोड़कर आध्यात्मिक जगत के रहस्य को जानने का प्रयास किया उनका चिन्तन बहुत ही सूक्ष्म रहा है। आत्मा, जीव, जगत, ईश्वर, ब्रह्म आदि उनके चिन्तन के विषय रहे है। यह जीव क्या है? कहा से आता है? जगत का स्वरूप क्या है? ईश्वर और ब्रह्मतत्व क्या है? मोक्ष का स्वरूप क्या है? इत्यादि गंभीर विषयों पर भारतीय दर्शन में चिंतन और मनन हुआ है। भारतीय संस्कृति अहिंसा प्रधान संस्कृति रही है। मन, वचन और काया से किसी को कष्ट न देना इसके मूल में है। ''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'' अर्थात् जो हमारे प्रतिकूल है उसे दूसरे के साथ भी नहीं करना चाहिए। इस दर्शन में पंचमहाव्रतों का केन्द्रीय स्थान है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह भारतीय दर्शन के मूल मंत्र है। 'अहिंसा परमो धर्मः' अर्थात् अहिंसा ही सर्वोत्कृष्ट धर्म है। किसी भी प्राणी का प्राणवियोजन न करना अहिंसा है। 'सत्य' मन, वचन और काया से समान व्यवहार करना 'सत्य' है। 'अचौर्य' किसी भी वस्तु को बिना दिये ग्रहण न करना 'अचौर्य' है। 'ब्रह्मचर्य' एक महत्त्वपूर्ण व्रत है। उपस्थेन्द्रिय विषयक संयम 'ब्रह्मचर्य' कहलाता है। अपरिग्रह शोषण मुक्त समाज के लिए आवश्यक है। आधुनिक युग में लोग आवश्यकता से अधिक संग्रह कर रहे है। जिसके कारण अनेक समस्याएं पैदा हो रही है। मनुष्य स्वार्थी होता चला जा रहा है। अगर हमें एक मकान की आवश्यकता है तो एक मकान ही बनाये जिससे दूसरों का अहित न हो, किन्तु आज देखा यह जा रहा है कि लोग बड़े-बड़े शहरों में अनेक मकान बनाकर के परिग्रह को बढ़ावा दे रहे है। लखपति करोड़पति बनना चाहता है और करोड़पति अरबपति बनना चाहता है जिससे संग्रह को बढ़ावा मिल रहा है। इस पद्धति पर जब तक रोक नहीं लगेगी तब तक संकट के बादल मंडराते रहेंगे। इच्छा तो आकाश के समान अनन्त होती है। उसकी पूर्ति कभी नहीं की जा सकती। मृगतृष्णा के समान अंत में परिग्रह मानव

को नष्ट ही कर देगा। स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की दृष्टि से हमें चिन्तन करना चाहिए। स्वार्थ से मतलब सब कुछ मेरे लिए है मेरे परिवार के लिए है। यह भावना उचित नहीं है। हमारी संस्कृति यह सिखाती है कि स्वयं जीयों और दूसरों को भी जीवित रहने दो। तभी चिंतन धारा आगे बढ़ सकती है। स्वार्थ से परे परार्थ की भावना है। परार्थ से तात्पर्य है कि सभी वस्तुओं का उपभोग मिलजुलकर करें। इसमें सामाजिकता की भावना प्रबल रहती है। इससे भी परे परमार्थ की चेतना है। परमार्थ की चेतना जागृत हो जाने पर सब कुछ हेय प्रतीत होने लगता है। परमार्थ की भावना मोक्ष की भावना है। मानव के जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है। अपने स्वरूप में स्थित हो जाना ही 'मोक्ष' कहलाता है। दूसरे शब्दों में आत्मा का परमात्मा में विलय मोक्ष है। जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष है। मोक्ष की स्थित में कामनाओं का त्याग हो जाता है और आत्मा राग-द्वेष मुक्त हो जाती है। इस स्थिति में सच्चिदानन्द ब्रह्म की अनुभूति होती है।

❖❖❖

प्रबोध कुमार गोविल का हिंदी उपन्यास 'अक़ाब' अंग्रेज़ी, सिंधी और पंजाबी में लोकार्पित!

जयपुर में आयोजित एक भव्य समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार व दूरदर्शन के पूर्व महानिदेशक नन्द भारद्वाज ने **प्रबोध कुमार गोविल** के बहुचर्चित उपन्यास '**अक़ाब**' के तीन अन्य भाषाओं- अंग्रेज़ी, पंजाबी और सिंधी अनुवाद की पुस्तकों का लोकार्पण किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों के रूप में डॉ. नरेंद्र शर्मा कुसुम, अनुकृति प्रकाशन के श्री बाबू खांडा, सिंधी समाज के प्रख्यात सेवी मनोहर रावतानी तथा डॉ. अखिल शुक्ला भी मौजूद थे।

इस अवसर पर प्रबोध कुमार गोविल ने कहा कि इस उपन्यास का अंग्रेज़ी अनुवाद पाठकों को युवा पत्रकार चित्रेश रिझवानी, सिंधी में मुंबई की भाग्यता लछानी तथा पंजाबी में पटियाला के डॉ. हर्ष कुमार हर्ष ने उपलब्ध कराया है। कार्यक्रम का संयोजन व संचालन श्री गजेन्द्र रिझवानी ने किया।

श्री नन्द भारद्वाज ने कहा कि प्रबोध कुमार गोविल कई विधाओं में लिख रहे हैं और उन्हें अपनी बात समूची अर्थवत्ता से कह पाने में महारत हासिल है। डॉ. नरेंद्र शर्मा कुसुम ने कहा कि गोविल के उपन्यासों का कैनवस इतना गहन है कि वो गंभीरता से पढ़े जाने पर विशद अर्थ देता है। डॉ. अखिल शुक्ला ने कहा कि प्रबोध कुमार गोविल एक समर्पित रचनाकार हैं और उनमें अपने पाठकों को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता है। बाबू खांडा ने अक़ाब उपन्यास की ग्लोबल अप्रोच को बेहद सामयिक और प्रामाणिक बताया।

इस अवसर पर शहर के प्रख्यात कहानीकार रत्न कुमार सांभरिया, रजनी मोरवाल, भागचंद गुर्जर, नीलिमा टिक्कू तथा लोकप्रिय कवि हरीश करमचंदानी, श्याम माथुर, मंजु महिमा भटनागर सहित अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही। इस उपन्यास को हिंदी व अंग्रेज़ी में 'साहित्यागार' द्वारा प्रकाशित किया गया है।

—हिमांशु जोनवाल, बरकत नगर, जयपुर